वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में बदलते सामाजिक सरोकार

डॉ. संजीवनी संदीप पाटील. हिंदी विभाग प्रमुख, कला,वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय,गडहिंग्लज,

संपर्क क्र.9545227228 ई-मेल. patilssu20@gmail.com

प्रस्तावना - 1980 ई. का दशक भारत की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण नीतिगत बदलाव लेकर आया था। भारत में 24 जुलाई 1991 ई.में नरसिंहा राव की सरकार ने व्यापारिक नीतियों में सुधार-परिष्कार करके भारतीय अर्थव्यवस्था को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा लायक बनाने हेतु उदारीकरण की नीति को लागू किया। इसका उद्देश्य दुनिया की सबसे बडी अर्थव्यवस्थाओं के साथ भारत की अर्थव्यवस्था को तेजी से विकसित अर्थव्यवस्था बनाना तथा दूसरी अर्थव्यवस्थाओं के निकट पहुंचाना या उनसे आगे निकलना था। हम कह सकते है कि भारत में घोषित रूप से भूमंडलीकरण लागू हुआ। भूमंडलीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो वित्तीय पूँजी का निवेश उत्पादन और बाजार द्वारा राष्ट्रीय सीमा में ही नहीं राष्ट्रीय सीमा से परे भूमंडलीय आधार पर निरंतर अपना प्रसार चाहती है।यह विश्व को ग्लोबल गाँव में बदलने की प्रक्रिया है। वैसे तो विकास और विनाश एक ही सिक्के के दो पहलु है। परंतु भूमंडलीकरण से भाषा,समाज,साहित्य,संस्कृति का विकास से अधिक विनाश ही हुआ है। वैश्वीकरण के चलते भारतीय परिवेश में पारिवारिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में बहुत अधिक परिवर्तन आया है। आज बेरोजगारी,महंगाई,बढ़ता भ्रष्टाचार आदि के कारण आम आदमी की जिंदगी अर्थहीन होती जा रही है।स्मार्ट और शार्टकट में अधिक कमाने और पाने की चाह ने मानव को पशु से भी बदतर तथा विवेकहीन बना दिया है।

मूल शब्द – भूमंडलीकरण, चेतना, बाजारवाद,मूल्य,उपभोक्तावादी दृष्टिकोण,साम्राज्यवाद आदि।

भूमंडलीकरण - भूमंडलीकरण मूलतः नव उपनिवेशवाद है। जो व्यापार के जरिए संस्कृति,भाषा,आचार-आचरण सब पर अपना प्रभाव कायम करता है। बाजार पर कब्जा करते हुए,भाषा,संस्कृति और मानवता को बाजारु बनाने की रणनीति बनाता है। इसके लिए भौगोलिक सीमाएँ बेमानी है।यह बाजार के माध्यम से दूसरे राष्ट्रों में प्रवेश करता है।वहाँ की संस्कृति को प्रभावित करता है। यह व्यक्ति की राष्ट्रीय चेतना को निगलने लगता है; व्यक्ति की सामूहिकता को नष्ट करके उसकी सोच को 'स्व' में बदल देता है।यह एक संक्रामक रोग की तरह समाज को एक व्यापारमंडी में बदल देता है।यह व्यक्ति को देश,संस्कृति तथा सभ्यता से विलग करके अपने व्यापारिक लाभ को पोषित करता है।मनुष्य को उपभोक्ता में बदलता है।यह व्यक्ति के स्वतंत्र चिंतन को निगल जाता है।यह मीडिया तथा विज्ञापन के माध्यम से दिमाग को पंगु बनाकर वैचारिकता पर कब्जा करता है।यह दावा करता है कि सब कुछ बिकाऊ है,बस दाम उचित मिले। प्रो.डॉ.श्रीराम शर्मा जी 21 वी सदी के संदर्भ में अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि, "आज हम जिस समय में जी रहे हैं,वह संचार,अविष्कार,व्यापार तथा बाजार का समय है यह मनुष्यता पर होने वाले प्रहार का समय है। यह ऐसा समय है,जहां दुनिया के बड़े देशों का अहंकार दिन-ब-दिन खूंखार होता जा रहा है।वो किसी क्षण भी इस खूबसूरत वसुंधरा को राख के ढेर में बदल सकते हैं।यह ऐसा समय है जब

दुराचार,व्यभिचार,अत्याचार,भ्रष्टाचार,शिष्टाचार,तिरस्कार और रिश्तेदार जैसे शब्द अपना परंपरागत अर्थ हो चुके हैं।यह समय प्यार का समय नहीं,बाजार का समय है।यह समय गांधीवाद का नहीं,नवसाम्राज्यवाद,उपयोगितावाद, उपभोक्तावाद और आतंकवाद का समय है।यह समय राजेंद्र यादव का नहीं पप्पू यादव का है।"1 बाजारवाद से प्रभावित आज का मनुष्य बाजारु बन गया है। भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार बन गया है। उपरोक्त कथन ही भूमंडलीकरण की परिभाषा स्पष्ट कर देता है।

21वी सदी वैश्वीकरण, बाजारीकरण एवं तकनीकी के आविष्कारों की सदी है। इन अविष्कारों के साथ ही इस सदी में कई समस्याएं उभरी हुई है। इन्हीं समस्याओं ने साहित्यकारों को साहित्य के प्रचलित आशय एवं विषयों को छोड़कर वर्तमान जीवन की समस्याओं पर कलम चलाने के लिए मजबूर किया है।

नवउपनिवेशवाद - विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों के आंतरिक मामलों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से किए जाने वाले हस्तक्षेप को नव-उपनिवेशवाद कहा जाता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अधिकतर गुलाम बने राष्ट्र आजाद हो गए। अपने साम्राज्यवादी चंगुल से मुक्त होते देश देख यूरोप तथा अन्यों ने स्वतंत्रता आंदोलन से साम्राज्यवादी शक्तियों पर वर्चस्व बनाए रखने के तरीके अपनाने शुरू कर दिए। ताकि स्वतंत्र होने के बावजूद भी राष्ट्र इस स्थिति में रहे कि वे अपना आर्थिक विकास न कर सके। आर्थिक विकास में सहायता के नाम पर पुनः राष्ट्र को अपने जाल में फंसा लें। आज इसी साम्राज्यवाद के जाल में कई राष्ट्र पराधीन बन गये है। इसी व्यवस्था को नव-उपनिवेशवाद के नाम से पहचाना जाता है। बहुराष्ट्रीय निगम,विदेशी सहायता तथा कर्ज,हथियारों की पूर्ति, आंतरराष्ट्रीय आर्थिक संस्थाएं,आश्रित राज्य आदि कई कारणों से आज दुनिया के कई राष्ट्र उपनिवेशवाद के शिकार बन गए हैं।

बदलते सामाजिक सरोकार - आज हमारे देश के अधिकतर युवा उच्च शिक्षा के लिए,अच्छी नौकरी के लिए विदेश जा रहे हैं।वहां की शिक्षा के लिए भारत से 35 से 40 हजार करोड़ रुपए प्रत्येक वर्ष भेजे जाते हैं।भारतीय युवाओं की ताकत,बुद्धि आज

विदेशी गुलाम बन रही है| यहीं नव-उपनिवेशवाद है। बाजारवाद तथा नव-उपनिवेशवाद का साहित्य पर प्रभाव दिखाते हुए दुबे जी कहते हैं, "वैश्विक बाजारीकरण ने समाज और साहित्य को आंकने का पैमाना भी अपने अनुसार ही स्थापित कर दिया है|"2 आज इन सभी बातों का अंकन साहित्य में दिख रहा है|छोटे बच्चे से लेकर बुजुर्गों तक इस नव-उपनिवेशवाद के कारण प्रभावित हो गए हैं। इसी कारण आज भारत में कई समस्याएं जैसे कि नारी समस्या,मजदूर समस्या, दिव्यांग समस्या,किन्नर समस्या,बाल समस्या तथा पर्यावरण समस्या आदि दिखाई दे रही है।

आज समूचा विश्व एक बाजार में तब्दील हो गया है।वैसे तो वास्को-द- गामा के आगमन से ही भारत में बाजारवाद आ गया है।'वसुधैव कुटुंबकम' की संकल्पना आज साकार हो रही है। दुनिया के किसी भी कोने से हम कोई भी चीज खरीद या बेच सकते हैं। वैसे तो वैश्वीकरण व्यापार को विकसित करता है लेकिन व्यापार विनिमय के साथ ही वैश्वीकरण का प्रभाव समाज,साहित्य एवं भाषा पर दिखाई देता है। एक ओर वैश्वीकरण से जहां मनुष्य दुनिया के साथ जुड़ गया वही वह परिवार से,समाज से कटता गया। "संस्कृति और भाषाएं अब एक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहना चाहती,क्योंकि आज का युग भूमंडलीकरण का युग है।"3 भूमंडलीकरण की चपेट में फंसे मनुष्य एवं संस्कृति को ही यह कथन स्पष्ट करता है। वैश्वीकरण ने 'ग्लोबल विलेज' का सपना दिखाया,पर मनुष्य- मनुष्य के बीच का अपनापन भुला दिया है। हम विदेश में आसानी से जाने लगे,पर परिवार,रिश्तेदार, आस-पड़ोस से बेखबर रहने लगे। बाजारवाद से मनुष्य में केवल उपयोगिता परख दृष्टि आ गई है। पहले बाजार केवल विनिमय के रूप में विद्यमान था। पर आज यही बाजार परिवार,रिश्तो में आ गया। बाजार नीति के अनुसार, " बाजार मनुष्य की,मनुष्य के द्वारा,मनुष्य के लिए बनाई गई संस्था है। अपने प्रारंभिक रूप में वह विनिमय के माध्यम के रूप में कार्यरत थी।"4

औद्योगिकी,प्रौद्योगिकी,जनसंचार,सूचनाएं,इंटरनेट,टीवी,मोबाइल के बढ़ते प्रभाव से भारतीय समाज बहुत तेजी से बदल रहा है। स्नेह,प्रेम,आदर और सहिष्णुता के बदले उपयोगिता देखी जा रही है।सभी रिश्तें-नातें पैसे की धुरी पर सिमटते जा रहे हैं। केवल पैसा कमाना ही एकमात्र लक्ष्य बन गया है।आज मनुष्य मानव मूल्यों को भूलकर बाजारवाद के चक्रव्यूह में फंसता जा रहा है। वह दिल से सोचने के बदले केवल दिमाग से सोच रहा है। जिसके परिणामस्वरुप मनुष्य पुरानी मान्यताएं,जीवन-मूल्य,सामाजिक सरोकार भूल रहा है। वैश्वीकरण ने विश्व के बीच की दूरियां तो मिटा दी,लेकिन मनुष्य-मनुष्य के बीच की दूरियां बढ़ा दी। "बाजार अब गांवों का हाट नहीं रह गया है। गांव में भी धीरे-धीरे मल्टीनेशनल कंपनियों से बने सामान पहुंचने लगे हैं।"5 बाजार और मीडिया आज महानगर से लेकर गांव तक फैल गया है। ग्रामसंस्कृति में 'बाजार हाट' होता था आज वह नहीं रहा। परिणामत: बाजारवाद के कारण पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण करने वाली आज की पीढ़ी अपनी जड़ों को भूलती जा रही है। रिश्तो में खोखलापन आ गया है। उपभोक्तावादी दृष्टिकोण अपनाकर Use And Throw की संस्कृति पनप रही है। उपभोक्तावाद का अमानवीय आदर्श प्रकट करते डॉ.पांण्डेय जी का मंतव्य है, " मुक्त बाजार,भूमंडलीकरण,उदारीकरण,तकनीक तथा जनसंचार माध्यमों ने एक बाजारू उपभोक्ता संस्कृति को जन्म दिया है जो अमानवीयता का आदर्शीकरण कर रही है।"6 उपभोक्तावाद का सबसे बड़ा असर भारतीय संस्कृति,विवाहसंस्था,परिवार,रिश्तें-नातें,संवेदना पर दिखाई देने लगा है।

सांप्रदायिकता - सांप्रदायिकता जिसके लिए अंग्रेजी में Comnunalism शब्द का प्रयोग होता है।जिसका अर्थ है राजनीतिक उद्देश्यों से सामाजिक परंपराओं का सामुदायिक शोषण।अपने संप्रदाय,धर्म को श्रेष्ठ मानकर दूसरे संप्रदाय और धर्म को गलत साबित करने की मानसिकता ही सांप्रदायिकता है।भारत में पहले विभाजन की त्रासदी से मानवीय मूल्य बदल गए थे। "भारत में सांप्रदायिकता छूत की बीमारी की तरह फैल रही है।"7 वैश्वीकरण के चलते ग्लोबल विलेज की परिकल्पना आ गई है। 21वी सदी में संपूर्ण विश्व सामाजिक,आर्थिक,राजनीतिक जीत के साथ एक दूसरे से जुड़ जाएगा ऐसा सोचा था। इसके विपरीत जातिवाद, क्षेत्रवाद,भाषावाद,संप्रदायवाद बढ़ता जा रहा है। भारतीय संविधान धर्मनिरपेक्ष, जाती निरपेक्ष है। परंतु आज पहले से अधिक सांप्रदायिकता बढ़ गई है। सूचना क्रांति,मीडिया के कारण आज देश के कोने-कोने में आतंकवाद फैल रहा है। संप्रदाय की ज्वाला आज भी धधक रही है।"असहिष्णुता अवांछित-अनियंत्रित लिप्सा, अत्याधुनिक शस्त्रों की सुलभता आतंकवाद को जीवित रखे हुए हैं।"8 इस कथन से बढती सांप्रदायिकता के कारण स्पष्ट होते है।

बदलती युवा मानसिकता - परिवर्तन संसार का नियम है।परिवेश के साथ बदलना ही जीवन है।लेकिन आज भूमंडलीकरण,नव-उपनिवेशवाद,सांप्रदायिकता,उपभोक्तावाद के कारण युवा पीढ़ी की मानसिकता में तेजी से परिवर्तन हो रहा है।इसी परिवर्तन के चलते सामाजिक सरोकार नष्ट हो रहे हैं।हर बात में पाश्चात्य अंधानुकरण से हमारी संस्कृति एवं विचारधारा ही संकट में आ गई है। सूचना प्रौद्योगिकी में हुए अविष्कार से आज युवा पीढ़ी के हाथ में मीडिया आ गया है।इस सोशल मीडिया के चलते युवक यंत्रों के साथ जुड़ गए हैं। बच्चों की मानसिकता स्पष्ट करते हुए भगवान ग़ऱ्हाडे जी कहते हैं, " अब तो बच्चों को टी.वी. पर दिखाए जाने वाले मम्मी-पप्पा अपने माता-पिता से भी अच्छे और हैंडसम लगने लगे हैं। दिन-रात,वक्त-बेवक्त,तरह-तरह के साबुन,शैंपू लगाकर नहानेवाली मॉडल्स युवा पीढ़ी को बिगाड़ रही है।"9 आज के युवा केवल चकाचौंध चाहते हैं।

आज युवा टी.वी.,कंप्यूटर,मोबाइल,फेसबुक,ट्रविटर पर अपना किमती समय बर्बाद कर रहे हैं। पब्जी गेम इसका उदाहरण है।कई युवाओं की इस गेम के कारण जिंदगी बर्बाद हो रही है। यंत्र तथा साधन हमारी सुविधा के लिए होते हैं ना कि हम

उनके लिए। लेकिन आज की युवा पीढ़ी इन यंत्रों के हाथ की कठपुतली बन रही है। पश्चिमी सभ्यता,रहन-सहन,मूल्य,पोशाख,रीति-रिवाज आदि का अंधानुकरण कर आज की युवा पीढ़ी अपना भविष्य बर्बाद कर रही है। मातृ-पितृ देवो भव: वाली हमारी संस्कृति के बच्चें आज अपने ही माता-पिता को बुढ़ापे में घर से बाहर निकाल रहे हैं। संवेदनहीन बने आज के युवा केवल पैसे के पीछे भाग रहे हैं। वैश्वीकरण का सबसे बुरा असर युवाओं पर तथा परिवार पर पडता दिख रहा है।

वैश्वीकरण से उपभोक्तावादी संस्कृति में जन्मा बाजारु मूल्य आज सर्वशक्तिमान बन गया है। आर्थिक मूल्यों की लड़ाई ने समाज को मूल्यहीनता का शिकार बनाया है। वैश्वीकरण से उत्पन्न विश्व व्यापार की परिकल्पना ने संपूर्ण विश्व को व्यापारी दृष्टिकोण दिया है। विश्व केवल दो वर्गों में बट गया है।एक विक्रेता और दूसरा ग्राहक।बहुराष्ट्रीय कंपनियां मीडिया एवं विज्ञापन के जरिए सारे विश्व में बाजार को फैला रही है।इस संदर्भ में डॉ. मीना सोनी कहती है, " बाजार हर उस व्यक्ति का स्वागत करता है,जो वहां क्रेता बनकर आता है अतः बाजार अनैतिक क्रय क्षमता को प्रोत्साहित करने में जरा भी संकोच नहीं करता।"10 अतः विश्व बाजार के चंगुल में फंसा आदमी दिन-ब-दिन केवल उपभोक्तावादी बन रहा है। आज की पीढ़ी को संस्कृति नहीं उपभोक्तावादी संस्कृति चाहिए। उपभोक्तावादी बनने की होड़ में वह अपने मूल्यों को,भावनाओं को, रिश्ते-नातों को ताक पर रख रही है। हर रिश्ते-भावना में स्वार्थवश मुनाफा ढूंढ रही है। दुर्भाग्य की बात यह है कि आज की पीढ़ी परिवार के साथ रहते समय परिवार के सदस्यों की उपयोगिता परख रही है। शादी के समय नौकरी करने वाले जीवनसाथी को चुना जा रहा है।बच्चों को जन्म देना भी है या नहीं इस पर भी सोचा जा रहा है।केवल पैसा कमानेवाली आज की पीढ़ी Double Income,No Kids संस्कृति को अपना रही है।बच्चों को जन्म देना मतलब समय की बर्बादी ऐसी सोच आज की पीढ़ी में दिखाई देती है।वह भविष्य के बारे में सोचने के बजाय केवल वर्तमान में रहना पसंद करती है। मीडिया टेक्नोलॉजी से जुड़ी रहने के कारण आज की पीढ़ी बिल्कुल रोबोट की तरह बन गई है।वह काम तो कर सकती है लेकिन कोई भावनाएं उसमें नहीं है।

निष्कर्ष

आज का युग ग्लोबल विलेज का युग है। वर्तमान समय का मनुष्य काफी तेज रफ्तार के साथ विकास कर रहा है लेकिन इस रफ्तार में वह संवेदना तथा मानवीयता भूलता जा रहा है।कहना गलत ना होगा कि वर्तमान समाज में मानवीय मूल्य लगभग खत्म ही हो रहे हैं। आज मनुष्य के स्वार्थ ने समाज एवं मूल्यों को खोखला बना दिया है। मनुष्य ने इस खूबसुरत दुनिया को इंसानियत के कत्ल का मैदान बना दिया है। मनुष्य के अंदर की संवेदना, मानवता का समुंदर धीरे-धीरे क्षीण होता जा रहा है। आज व्यक्ति वस्तु में परिवर्तित होता जा रहा है। ग्लैमर की दुनिया,मिड नाईट पार्टी,पार्टनर एक्सचेंज,कॉलसेंटर,एम.एन.सी.का,पैकेज,पेज थ्री की दुनिया,जंकफूड,फास्टफूड,पिज्जा,बर्गर,गरीबी,बेरोजगारी,भुखमरी,महगाँई,संगठित क्षेत्र से रोजगार की समाप्ति,अर्थ-व्यवस्था में व्यापक घपला,व्यक्ति का अकेलापन,आंतकवाद,निजीकरण,संचार तंत्र,मीडिया क्रांति,ब्रांड संस्कृति, उपभोक्तावाद, SEZ, FTZ,FPZ आदि में मस्त रहने की वृत्ती आज बढ रही है।

संदर्भ सूची

1.प्रो.शर्मा श्रीराम,समकालीन हिंदी साहित्य:विविध विमर्श,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,प्र.सं.2009,पृ.11

2.डॉ.दुबे शितला प्रसाद,साहित्य,समाज और मीडीया,अतुल प्रकाशन,कानपुर,प्र.सं.2013,भूमिका

3.सं.डॉ.शर्मा प्रणव,डॉ.गोस्वामी प्रणिता,हिंदी का अस्मिता पर्व,भावना प्रकाशन,दिल्ली,प्र.सं,2015,भूमिका से

4.सं.डॉ.धापसे बी.आर.,इक्कीसवीं शती और हिंदी साहित्य,शिंदे संग्राम,पृ.205

5.सं.डॉ.पाण्डेय मायाप्रकाश,समकालीन साहित्य बाजार और मीडीया,माय साइलेंट डायरी,2014,पृ.79

6.सं.डॉ.पाण्डेय श्यामसुंदर,समकालीन हिंदी कहानी सरोकार और विमर्श,डॉ.पाण्डेय सतीश,पृ.59

7.सं.डॉ.गव्हाडे भगवान,डॉ.सोनाले हेमंत,समकालीन हिंदी साहित्य:विविध विमर्श,शेख हबीब,साहित्य सागर,कानपुर,प्र.सं.2011,पृ.75

8.सं.डॉ.यादव वीरेंद्र सिंह,आतंकवाद का अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य:चुनौतियां और समाधान की दिशाएं,ओमेगा प्रकाशन,नई दिल्ली,प्र.सं.2015,संपादकीय से

9.सं.डॉ.राठोड ललिता,डॉ.झंवर ओमप्रकाश,21वीं शती का वैश्विक साहित्य,डॉ.गर्हाडे भगवान,विद्या प्रकाशन,कानपुर,प्र.सं.2012,पृ.131

10.सं. डॉ.मल्लिक विष्णुदेव,21वीं सदी के साहित्यिक विमर्श, डॉ.सोनी मीना,विकास प्रकाशन,कानपुर.प्र.सं.2013,पृ.64